मूल्य एवं शिक्षक

डॉ. योगेशकुमार आर. परमार
व्याख्याता,
श्रीमती एस. आई. पटेल इप्कोवाला कोलेज ओफ एज्युकेशन, पेटलाद

१. प्रस्तावना

डॉ राधाकृष्णन के मतानुसार संकुचित मन के व्यक्ति देश को महान नही बना सकते। मन की संपन्नता शिक्षा एवं शिक्षा के वाहक गुरु के द्वारा ही संभव है। मानव मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण समूह है जिसे अपने संस्कारों या पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है और अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। व्यक्ति के जीवन मूल्यों के प्रमुख स्त्रोत है - उसकी अपनी संस्कृति, अपने संस्कार एवं वंशानुक्रम। मनुष्य की जीवन पद्धति उसके मानवीय मूल्यों पर आधारित होती है। मानवीय मूल्यों में परिवर्तन के साथ-साथ उसके जज्ञवन पद्धति में भी परिवर्तन आना अनिवार्य तथ्य है, जीवन पद्धति में परिवर्तन के कारण अपने परिवेश से उसके समायोजन में परिवर्तन दृष्टिगोचर होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मनुष्य की सतत परिवर्तनशील आकांक्षाओं एवं कल्पनाओं के कारण ही वह किसी लक्ष्य को स्वयं निर्धारित कर उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील हो जाता है। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के अतिरिक्त अन्य बातें उसे गौण मालुम पडती है। ऐसी परिस्थिति में उसके मूल्यों मेंह्रास के साथ ही अपने परिवेश से उसके सामंजस्य में बाहय परिवेश से सामजस्य के मध्य कोई निकट संबंध है।

२. समस्या का कारण

विविधताओं से पूर्ण भारत देश अपनी कला संस्कृति तथा दर्शन की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गवं करता है, किन्तु उसके इस भावना पर अनरवत प्रहार एवं मूल्यहीन मानव की सोच उसे लगातार झकझोर रही है। मानवीय मूल्यों में निरंतर गिरावट के रुप में इस समस्याओं का निश्चित ही शिक्षा के पास है एवं वर्तमान शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक संस्था को इस पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है।वर्तमान समाज में मूल्यहीनता के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार है।

- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत विद्यार्थीयों द्वारा प्राप्त शिक्षा व जीवंत अनुभवों में असंगति। शिक्षा जो वास्तव में शिक्षित बालक है, उन्हें उचित स्थान दिलाने में असमर्थ है।
- विविध सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा एवं समाज द्वारा निर्धारित भौतिक लक्ष्यों में विसंगति।
- प्राचीन पाठयचर्या एवं आधुनिक विज्ञान की शिक्षा में तालमेल का अभाव
- मूल्ययुक्त बालक या मूल्य की शिक्षा बालक को वर्तमान प्रतियोगिता से बाहर कर देगी ऐसी एक भ्रामक अवधारणा है।
- आर्थिक उन्नति एवं महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करन हेतु मूल्य त्यागने में संकोच न होना।
- अध्यापन व्यवसाय में गैर जिम्मेदार व्यक्तियों का प्रवेश।
- विद्यालयों का संसाधनों से सुसज्जित न होना। होने पर सही प्रयोग न होना।
- अवकाश क्षणों का सही सदुपयोग नही होना।

- छात्रों के मध्य राजनैनिक संगठनों का प्रवेश उन्हें दिशाहीन करता है।
- सही नतृत्वकर्ता प्रशासकों, शिक्षको का अभाव।
- समाज, समुदाय के द्वारा अच्छे कार्यो को मान्यता नही देना। सामाजिक अच्छाइयाँ का अभाव अर्थात कोई गलत कर रहा है तो हमें क्या करना।
- औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वैज्ञानिकीकरण, जनसंख्यावृद्धि इन सबकी जननी है।
- आधुनिकीकरण की भ्रामक अवधारणा।
- संप्रेषण, जनसंचार साधनों का दैनिक जीवन में बढता गलत प्रयोग।
- माता-पिता के द्वारा बालको के साथ समय व्यतित करने का अवसर न होना।
- भौतिकवादी जीवन दर्शन।
- विद्यालयों में सहशैक्षणिक क्रिया कलाओं का अभाव।
- सदसाहित्य एवं स्वध्याय के प्रति अरुचि।
- चरित्र निर्माण एक दिन या अकेले एक व्यक्ति के द्वारा संभव नही जबकि सभी मानते है इसका दायित्व केवल शिक्षक का है।
- असंतुष्ट जीवन दर्शन
- घर, विद्यालय, समुदाय के वातावरण का प्रभाव। समाज के आदर्श एवं मान्यताओं में परिवर्तन, संयुक्त परिवार में विघटन, एकल परिवार को प्रोत्साहन।
- बालको के माता-पिता, अभिभावकों का व्यवसाय बालकों की रुचि को प्रभावित करता है।
- व्यवसायिक शिक्षा जो कैवल लाभ-हानि का पढ़ा रही है, संवेदना, भावना का नही।
- बाल्यकाल से ही बालको को वैज्ञानिक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री बनाने के लिए कटिबद्ध शिक्षा जो फसल पकने के पहले फसल को गुणवत्ता के साथ काट लेना चाहते है अर्थात अति महत्वाकाक्षां प्रकारान्तर में आत्मघाती सिद्ध होती है जो आज दिखाई दे रहा है।
- यांत्रिकीय जीवन जिसमें भावना,संवेदना, करुणा, सेवा, व्यवहार एवं पुरुषार्थ को स्थान नहीं।
- विद्यालय का महाविद्यालय के आचार्यो, अधिकाररियों, बालको, पालको से अनतः संबंध आवश्यक नहीं माना जाना।

उक्त सभी कारण शिक्षक, बालक एवं समाज को गलत दिशा में ले जाकर गलत आचरण के लिए बाध्य करते है। निम्नकिंत उपायों से संभवतः नयी हमें मिल सकती है।

३.निदानात्मक उपाय

•शिक्षा प्रक्रिया में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं आचरण पक्ष का समावेश। आचरण पक्ष जिसका संबंध सामाजिक वातावरण से होता है, अनुकरण की प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली होती है। अतः विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन, जिससे छात्र अच्छे गुणों एवं मूल्यों का जीवन में आचरण करें। जैसे महापुरुषों की जयंतियाँ।

- विषयों के शिक्षण में मूल्यों का विकास, इस हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण।
- पाठय सहभागी क्रियाएँ - कक्षा में केवल सुनने से मूल्यों का विकास संभव नही अतः मूल्यपरक पाठय सहभागी क्रियाएँ, खेलकूद, संगीत, नाटक, चित्रकारी, स्काउटिंग, गल्स गाइडिंग, रेड क्रोस, एन. सी. सी., एन.एस.एस. आदि विभिन्न विषयों से संबंधित क्लबों का आयोजन में सबकी सहभागिता अनिवार्ययः हो।

- शिक्षण विधियाँ तथा पविधियाँ - पाठय सहभागी क्रियाओं के आयोजन में निम्नांकित विधियों का उपयोग हो-
- आदर्श अनुकरण विधि - शिक्षक की आदर्श भूमिका
- नाटकीय विधि - नैतिक सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु नाटकों का मंचन
- कहानी विधि - महापुरुषों की शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनायी जाये। इस हेतु योग्य शिक्षक का होना अनिवार्य है।
- शैक्षिक यात्राएँ - सांस्कृतिक धरोहरों, स्थलों का दर्शन।
- क्रिया केन्द्रित प्रशिक्षण - स्काउटिंग, गल्स गाइडिंग, रेड क्रोस, एन. सी. सी., एन.एस.एस. आदि शिविरों में बालकों को नेतृत्व का दायित्व सोंपा जावे। शिक्षको की भागीदारी अनिवार्य हो।

४. विद्यालय की भूमिका

निर्धारित पाठयक्रम के अतिरिक्त स्वशासन पर बल, विभिन्न विज्ञान क्लब, साहित्यिक समिति परिषदों, संघों का निर्माण, साक्षरता अभियान, समाज सेवा, सफाई अभियान, राष्ट्रीय पर्वों का सही आयोजन, वन महोत्सव, वृक्षारोपण कार्यक्रम, रेड क्रोस, एन. सी. सी., एन.एस.एस. आदि से संबंधित गतिविधियाँ आवश्यक है।

५. शिक्षक की भूमिका

- कक्षा में दिये जाने वाले उपदेश आचरण व्यवहार में उतारें। शिक्षक के ज्ञान व्यवहार, वेशभूषा, सम्पूर्ण क्रियाकलाप का प्रभाव बच्चों पर पडता है। अतः शिक्षक का कार्य गुणात्मक हो तथा व्यसनों से दूर रहें। छात्रों से प्रजातांत्रिक व्यवहार करें जिससे छात्रों को अपने शिक्षक पर पूर्ण आस्था एवं विश्वास हो अर्थात उसे ज्ञानी एवं व्यवहार परक आचरण वाला होना चाहिए।
- शिक्षक एवं छात्र के बिच धनात्मक संबंध हो। छात्रों को आर्थिक कठिनाईयों को हल करने के उपाय जैसे ज्ञानार्जन के साथ धनार्जन की व्यवस्था हो।
- अध्यापकों की आर्थिक, सामाजिक शैक्षिक स्थिति में सुधार, रिफ्रेशर पाठयक्रम का आयोजन, उन्मुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन। शासन-प्रशासन द्वारा इसे गंभीरता से लिया जावे।
- शिक्षक-पालक संघ का गठन एवं दिवसों का आयोजन महज खानापूर्ति के लिये न हो।
- संस्थागत योजना का परिपालन यथासंभव कडाई से हो।
- पुस्तकालय, वाचनालय की स्थिति में सुधार पवं शिक्षक-विद्यार्थी को साथ-साथ पढ़ने पर जोर

उक्त विचारों से स्पष्ट है प्राचीनकाल से लेकर वर्तमानकाल में शिक्षा का उद्देश्य बालक में श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का विकास करना है। कोई व्यक्ति कितना बडा विद्वान क्यों न हो, यदि वह मानवोचित गुणों से युक्त नहीं (यथा-सत्य, सदाचार, प्रेम,शांति, सहयोग, दया, क्षमा, समय का पाबंध) है तो एक ओर जहाँ उसके लिए परिवार एवं समाज में तालमें स्थापित करना कठीन होगा वहीं दुसरी ओर वह अपने प्रति भी एक अपराध भाव सेग्रसित होगा जो उसके मानसिक स्वास्थ्य क लिए अनुकूल नहीं है। अस्वस्थ मनुष्य/बालक यश्टि से समश्टि के लिए बोझ होगा। कुंठा, वैयमनस्य, कूप्रवृत्तियों, पारिवारिक कलह से यदि बालक को बचाना है तो विद्यालयों, शिक्षकों, प्रशासकों को यह कार्य करना पडेगा।

मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है। मूल्य निर्माण में शिक्षक का पूर्ण सहयोग आवश्यक है। उनका धर्म एवं अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान पवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे ज्ञान ही पर्याप्त नही अपितु मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्वपूर्ण है। मूल्य परक जीवन का अभ्यास आवश्यक होता है, इससे जीवन की सार्थकता को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। मूल्य

जीवन के अन्तिम लक्ष्य होते है इसलिए शिक्षा मूल्यपरक होनी चाहिए। शिक्षा की प्रक्रिया हमें मूल्यहीनता से बचा सकती है। शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन विद्यालयन में लिया जाता है और उसमें विभिन्न प्रकार के पाठयक्रम तथा पाठय सहभागी क्रियाओं की व्यवस्था की जाती है किन्तु इस व्यवस्था को आचरण में लाकर परिपालन की आवश्यकता है।

विषय शिक्षक का दायित्व है कि निर्धारित पाठयक्रम के साथ इस तरह समय विभाग चक्र के आधार पर समायोजन किया जावे ताकि ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं आचरण पक्ष तीनों का विकास हो। भाषाओं, महापुरूषों की जीवनियाँ, कला विषय, सामाजिक विषयों, विज्ञान विषयो में कुछ वैचारिक बिन्दुओं को खोजकर अध्यापन के दौरान उसका प्रयोग किया जावे। इस उत्तरदायित्व का निर्वहन केवल विद्यालय एवं शिक्षक ही कर सकते है। प्रशाशन एवं शासन को चाहिए कि शिक्षकों को इस हेतु प्रोत्साहित किया जावे, तथा समाज के लोगो को इनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव रखने हेतु प्ररित भी। हम सभी के एक जुट होकर प्रयास से वह दिन दूर नही जब हम और हमारा राष्ट्र इस समस्या का समाधान शीघ्रता से कर एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकता है और गौरवशाली परम्परा की रक्षा भी।

महाविद्यालय में संचालित पाठयक्रम के आधार पर विभिन्न सैद्धांतिक एव व्यवहारिक क्रियाकलापों का संचालन होता है। इससें शिक्षको की सहभागिता स्वयं में मूल्य निर्माण के लिए ही हो। इस हेतु समय समय पर हमें विभिन्न विद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं में जाने का अवसर मिलता है। अध्यापक होने के नाते मैने स्वयं अनुभव किया है शिक्षक, प्रशासन विद्यार्थियों के बीच सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में अध्ययन-अध्यापन का कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा है तथा जिन शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया है हम उन उद्देश्यों के माध्यम से हम उन लक्ष्यों तक नहीं पहुँच पा रहे है और एक विद्यालय के माध्यम से एक ऐसी भीड़ उत्पन्न कर रहे है जिनकी कोई दिशा ही नही रहे है जो स्वयं एवं राष्ट्र के लिए वर्तमान तथा भविष्य में दुःख अवसाद के सिवाय कुछ नही दे पाएगी। अभी भी वक्त है हम शिक्षा-शिक्षक, विद्यालय, समाज, राष्ट्र में ऐसा समन्वय स्थापित करें कि देश की अस्मिता की रक्षा कर सकें। डॉ. नत्थूलाल गुप्त के अनुसार - "गुरु दीपक के समान है, यदि उसकी ज्योति स्थिर एवं अमंद है तो वह अपने ही अनुरूप शत-शत दीपों को प्रज्ज्वलि कर देगी और अपनी उज्जवलता को किसी तरह कम न होने देगी।"

संदर्भ साहित्य

1. भटनागर सुरेश (1979-80) आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
2. चौबे सरयू प्रसाद (1976) शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार
3. गुप्त नत्थुलाल (1987) मूल्यपरक शिक्षा ।
4. जायसवाल सीताराम (1995) शेक्षिक समाज शास्त्र
5. एन.सी.ई.आर.टी. (1992) एज्युकेशन इन वल्युज, ए. सोर्स बुक, नयी दिल्ही
6. पांडेयराम शुकल और मिश्र करूणाशंकर (1991) मूल्य शिक्षण
7. रुहेला सत्यपाल (1972) भारतीय शिक्षा का समाज शास्त्र
8. शर्मा बी. एस.(1978-83) इफेक्टिवनेस ऑफि प्री सर्विस टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम एट एलीमेन्ट्री राजस्थान
9. शिक्षा में चुनौती (1985) सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका एन.सी.ई.आर.टी.वर्ष 10 से 4 अंक अप्रेल 1993
10. सिन्हा यू (1980) द इन्पेक्ट ऑफि टीचर एज्युकेशन प्रोग्राम आन द प्रोफेसनल एफीसिएन्सी ऑफि द टीचर,
11. थर्ड सर्वे रिसर्च इन एज्युकेसन नई दिल्ही एन.सी.ई.आर.टी (1978-83)